Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 3 | MARCH 2019

राज्य विकास में मानव संसाधन का योगदान : नालंदा जिला के विशेष संदर्भ में।

आलोक कुमार [1]

[1] शोध छात्र M.U. प्राध्यापक, महेश सिंह यादव इंटर कॉलेज (गया)

ABSTRACT:

KEYWORDS:

परिचय :–

संसाधन भूगोल के अध्ययन में मानव संसाधन का केन्द्रीय स्थान है। इसका कारण है कि प्रकृति का कोई भी पदार्थ तब तक संसाधन नहीं बनता है। जब तक की मनुष्य अपनी आवश्यकता पूर्ती के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरण का उपयोग करता है। भूमि, जल, मिट्टी, खनिज, ईंधन के संसाधनों, वनस्पति, जीव–जन्तुओं, आदि का उपयोग करके मनुष्य उत्पादन, कृषि, पशुपालन, उद्योग, व्यापार आदि की सुविधायें उपलब्ध करता है। साथ ही वह सामाजिक संगठन, राजनीतिक प्रबंध और सांस्कृतिक विकास करता है।

मानव स्वयं एक आर्थिक संसाधन है, लेकिन यह संसाधन तक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता है जब तक कि यह योजनाबद्ध एवं प्रभावित रूप से उपयोगी न हो। प्रो० बी०एल०रावत के शब्दों में मानव आर्थिक क्रियाओं का आदि और अंत दोनो है। प्रो० ए० मुखर्जी के मतानुसार किसी भी राष्ट्र की उन्नति मानवीय संसाधन संगठित करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

"Man Plays a Unique role in the overall scheme of resource development. He is both producer as well as the consumer of resources".

"Man alone develops biotic resources like natural vegelation (forests) and animals".

प्राकृतिक संसाधनों के अतिरिक्त मानव संसाधन भी महत्वपूर्ण है क्योंकि बिना मानव श्रम (Human Labour) के प्राकृतिक संसाधनों का कोई महत्व या मूल्य नहीं है। मानव ही अपने वातवरण में परिवर्तन कर, उसमें पाए जाने वाले पदार्थो की अपनी आवश्यकता के लिए उपयोग में लाता है। उसी के परिश्रम के फलस्वरूप आज विश्व में कहीं कृषि वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है तो कहीं खनिज पदार्थो का दोहन (Manufacturing Industry) का विकास संभव हो पाया है। पृथ्वी पर प्राप्त होने वाले प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के लिए मानव के विचार, उसके संगठन और श्रम सभी की आवश्यकता होती है।''

बिहार के बंटवारे के बाद अधिकांश खनिज, उद्योग तथा वन–संसाधन झारखण्ड राज्य में चला गया, पर शेष बिहार में मानव संसाधन की पर्याप्तता है। उन्हें कुशल, प्रशिक्षित बनाकर बिहार राज्य का विकास किया जा सकता है।

संकल्पना :–

मानव शास्त्री दृष्टिकोण से साक्षरता जनसंख्या का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है जिसके आधार पर सामाजिक विकास का मापदण्ड निश्चित किया जा सकता है। साक्षरता के विकास से मनुष्य सीमित परिवेश से बाहर निकलकर अपने क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियों से अन्योयाश्रित संबंध स्थापित कर लेता है। साक्षरता का प्रभाव अन्य जनांकिकीय तथ्यों जनता (Fertility) भरण (Mortality) और आर्थिक प्रतिरूपों पर भी पड़ता है।

विभिन्न देशों में साक्षरता की परिभाषा अलग–अलग है। इससे विश्व स्तर पर आँकड़ो की तुलना नहीं हो पाती है। कई देशों में लिखना, पढ़ना तथा गणना करने की क्षमता को साक्षरता का मापदण्ड माना जाता है तो कुछ उन्नत देशों में औपचारिक शिक्षा के विशिष्ट स्तर को जैसे प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करना साक्षरता का मानदण्ड है। राष्ट्रसंघ जनसंख्या आयोग के अनुसार किसी भाषा में एक साधरण संदेश को समझकर पढ़ एवं लिख सकने की क्षमता, रखने वाले व्यक्ति को साक्षर कहा जाता है।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नांकित परिसंकल्पनाओं पर आधारित है :–

1. नालंदा जिला में साक्षरता में कमी अनेक समस्याओं को जन्म दे रहा है।
2. वर्त्तमान समय में साक्षरता में वृद्धि हो रहा है।
3. साक्षरता में वृद्धि लोगों के जागरूकता के कारण सरकार के प्रयास से ही हो रहा है।
4. साक्षरता की वृद्धि और प्रसार क्षेत्र के सम्पूर्ण सामाजिक–आर्थिक अर्न्तप्रक्रिया का परिणाम है।
5. नालंदा जिला के गाँवों में साक्षरता का समुचित विकास अभी भी नहीं हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. नालंदा जिला साक्षरता के अनुसार ही जन स्थानान्तरण होते है।
2. नालंदा जिला के साक्षरता से विवाह के समय स्त्री की आयु प्रभावित होती है।
3. नालंदा जिला में साक्षरता से विकास की योजनाएँ और शिक्षानीति निर्धारित की जाती है।
4. नालंदा जिला में साक्षरता मानसिक गरीबी दुर करने में सहायक है।
5. नालंदा जिला में साक्षरता प्रजा तांतरिक ढ़ाँचे को बनाये

रखने के लिए आवश्यक है, क्योंकि इससे स्वतंत्र मताधिकार का प्रयोग संभव है।

विधितंत्र :–

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीय आंकड़े पर आधारित होगा।

प्राथमिक आंकड़े के लिए नालंदा जिला के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से प्रश्नावली एवं अनुसूची तैयार कर प्रतिचयन एवं यादृश्किक विधि द्वारा मुख्य रूप से आँकड़े का संग्रह किया गया है। साथ ही विकास केन्द्रों से संचालित लाभ के योजनाओं की जानकारी प्राप्त किया गया है।

द्वितीयक आंकड़े का संग्रह प्रखंड स्तर पर बी.डी.ओ, सी.ओ. कार्यालय से ग्रामीण बैंकों द्वारा जिला सांख्यिकी कार्यालय एवं भारतीय जनगणना आयोग द्वारा प्रकाशित हैंडबुक से प्राप्त किया गया है। साथ ही ग्रामीण विकास से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययन, पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख एवं इससे संबंधित पुस्तकों से भी सहायता लिया गया है। द्वितीय विधि से प्राप्त आंकड़े का सांख्यिकी विधि से विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :–

अध्ययन क्षेत्र नालंदा जिला मध्य गंगा के दक्षिणी मैदान में स्थित है। इसका विस्तार $24^{0}26'51''$ उत्तरी अक्षांश से $25^{0}27'43''$ उत्तरी अक्षांश एवं $85^{0}10'8''$ पूर्वी देशान्तर से $85^{0}54'18''$ पूर्वी देशान्तर के बीच है। इस जिला के उत्तर में पटना जिला, दक्षिण में गया एवं नवादा जिला, पूरब में शेखपुरा जिला एवं पश्चिम में जहानाबाद और गया जिला स्थित है जो इसके सीमा का निर्धारण का कार्य करते है। इसका क्षेत्रफल 2370 वर्ग किलोमीटर एवं 2011 के जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 2877653 है, जिसमें 2415034 ग्रामीण लोगों की आबादी है। नालंदा जिला में तीन अनुमंडल बिहारशरीफ, हिलसा एवं राजगीर है एवं इस जिला में 20 विकास प्रखंड है। इस जिला का मुख्यालय बिहारशरीफ है।

साक्षरता :

बिहार का यह भाग सदियों से मानव अधिवास तथा सभ्य लोगों का केन्द्र रहा है। बौ(काल में यह विश्व के मानचित्रा पर शैक्षणिक केन्द्र के रूप में विख्यात हुआ परन्तु आज साक्षरता के दृष्टिकोण से विश्व तथा भारत के कई राज्यों की तुलना में कापफी पीछे है। 1981 के जनगणना के अनुसार भारत के साक्षरता 36.2% थी और पुरूष और महिलाओं में साक्षरता क्रमशः 46.90% तथा 24.80 थी उस समय बिहार में साक्षरता सिपर्फ 26.01% थी, जिसमें पुरूष 37.78% तथा महिलायें 13.58% थी। नालंदा जिला में कुल साक्षरता 32.92% थी और पुरूष और महिलाओं में साक्षरता क्रमशः 38.33% एवं 18.23% थी।

2001 में नालंदा जिला में 50.42% साक्षरता हो गई और पुरूष एवं महिलाओं में क्रमशः 64.46% तथा 34.99% हो गई। वस्तुतः साक्षरता में 20 साल के अंतराल में डेढ़ गुणा से अधिक साक्षरता में वृद्धि हुई है। 1981 में मात्र 32.92% साक्षरता थी, जो 2001 में 50.42% थी और 2011 में बढ़कर 66.41% हो गया। पुरूष और महिलाओं में साक्षरता क्रमशः 73.39% एवं 53.33% हो गया। आज भी भारत के औसत साक्षरता से बहुत कम बिहार में है। भारत में कुल साक्षरता 74.04% है जबकि बिहार के 63.39% है। पुरूष साक्षरता देश में 82.14% है जबकि बिहार में 73.39% है। महिलाओं के साक्षरता में भी काफी अंतर है। देश में 65.46% साक्षर है जबकि बिहार में 53.33% है।

नालंदा जिला में भी साक्षरता में वितरण प्रारूप में क्षेत्रीय विषमतायें है। 1981 के जनगणना के अनुसार सबसे अधिक कुल साक्षरता बिहारशरीफ प्रखंड में (42.67%) थी और नालंदा जिला के औसत साक्षरता से अधिक वाले प्रखंडों में एकंगरसराय (34.98%), इस्लामपुर (33.74%), चंडी (32.85%) है। औसत से कम कुल साक्षरता वाले प्रखंडों में अस्थावाँ (31.34%), राजगीर (31.02%), नूरसराय (29.89%), हिलसा (29.86%), गिरियक (29.32%), रहुई (28.66%), हरनौत (28.82%) तथा सरमेरा (25.10%) है। पुरूष साक्षरता 1981 में नालंदा जिला में 38.33 प्रतिशत थी। सबसे अधिक पुरूष साक्षरता बिहारशरीफ प्रखंड (55.03%) में था क्योंकि यह जिला मुख्यालय वाला प्रखंड है तथा नगरीय आबादी है। इस प्रखंड के

तालिका क्रमांक - 1

साक्षरता, 2011

क्र. सं.	प्रखंड	कुल आबादी	पुरूष	महिला	0-6 की आबादी			6 वर्ष की आबादी			साक्षरता		
					कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
1	बिहारशरीफ	494489	257669	236820	82011	42413	39598	412478	215256	197222	285942	166228	119714
2	नूरसराय	172351	89560	82791	31448	16274	15174	140903	73286	67617	90779	55680	35099
3	रहुई	144040	73926	70114	27522	14231	13291	116518	59695	56823	71484	43937	27547
4	अस्थावाँ	163938	84532	79406	31030	15948	15082	132908	68584	64324	79363	48565	30798
5	बिंद	61984	31714	30270	13173	6726	6447	48811	24988	23823	26539	16652	9887
6	राजगीर	130183	68053	62130	22857	11858	10999	107326	56195	51131	68271	41002	27269
7	सिलाव	151249	78574	72675	26644	13764	12880	124605	64810	59795	79596	47671	31925
8	बेन	87387	45549	41838	15199	7809	7390	72188	37740	34448	46645	28209	18436
9	गिरियक	96845	50124	46721	17959	9318	8641	78886	40806	38080	48123	29198	18925
10	कतरीसराय	41821	21528	20293	7192	3658	3534	34629	17870	16759	22264	13933	8631
11	हरनौत	176140	92491	83649	33306	17184	16122	142834	75307	67527	87767	53946	33821
12	सरमेरा	97083	50583	46500	19273	10006	9267	77810	40577	37233	42846	26780	16066
13	हिलसा	197309	103227	94082	35921	18923	16998	161388	84304	77084	107689	65829	41860

14	कराय परशुराय	73951	38305	35646	14108	7234	6874	59843	31071	28772	33822	21169	12653
15	चंडी	152156	79124	73032	27991	14428	13563	124165	64696	59469	80558	49094	31464
16	थरथरी	68393	35785	32608	12505	6531	5974	55888	29254	26634	34099	21394	12705
17	नगरनौसा	94467	49319	45148	17566	9203	8363	76901	40116	26785	48999	29877	19122
18	एकंगरसराय	171214	89377	81837	28788	15060	13728	142426	74317	60109	98603	59912	38691
19	परवलपुर	70316	36686	33630	11927	6139	5788	58389	30547	27842	40998	24865	16133
20	इस्लामपुर	232337	120934	111403	42261	21953	20308	190076	98981	91095	125546	75917	49629
नालन्दा जिला		2877653	1497060	1380593	518681	268660	250021	2358972	1228400	1112572	1519933	919858	600375

तालिका क्रमांक - 2

नालंदा जिला के विभिन्न प्रखंडों में साक्षरता दर प्रतिशत में (2001-2011)

क्र.सं.	प्रखंड	2001			2011		
		कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
1	बिहारशरीफ	61.76	72.32	49.99	69.32	77.22	60.70
2	नूरसराय	52.22	67.37	35.85	64.43	75.91	51.91
3	रहुई	51.65	66.54	35.27	61.35	73.60	48.48
4	अस्थावाँ	48.45	61.03	34.67	59.71	70.81	47.88
5	बिंद	44.46	57.89	29.35	54.37	66.64	41.50
6	राजगीर	53.65	66.84	38.98	63.61	72.96	53.33
7	सिलाव	51.58	64.27	37.70	63.88	73.56	53.39
8	बेन	52.42	67.33	37.36	64.62	74.75	53.52
9	गिरियक	49.58	63.83	34.33	61.00	71.55	49.69
10	कतरीसराय	51.40	65.24	36.07	64.29	76.29	51.50
11	हरनौत	51.59	64.96	36.60	61.45	71.63	50.08
12	सरमेरा	44.80	58.16	30.07	54.06	65.99	43.15
13	हिलसा	52.17	66.49	36.47	66.73	78.08	54.30
14	कराय परशुराय	44.42	58.54	38.11	56.52	68.13	43.98
15	चंडी	51.65	66.33	36.23	64.88	75.88	52.91
16	थरथरी	50.96	65.01	36.33	61.01	73.13	43.43
17	नगरनौसा	49.39	63.72	33.91	63.72	74.48	51.98
18	एकंगरसराय	54.30	70.96	40.67	69.23	80.62	64.82
19	परवलपुर	57.28	70.36	43.06	70.21	81.40	57.94
20	इस्लामपुर	52.90	65.94	38.44	66.05	76.70	54.48
नालन्दा जिला		50.42	64.46	34.99	64.43	74.86	53.10

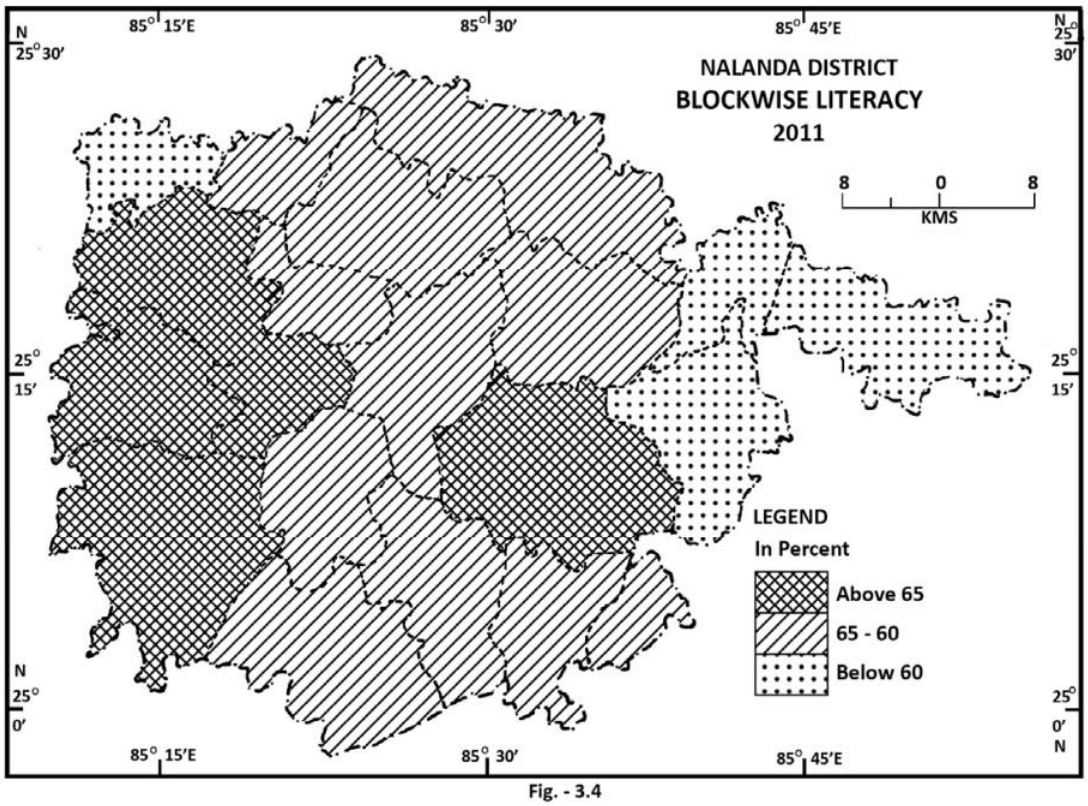

Fig. - 3.4

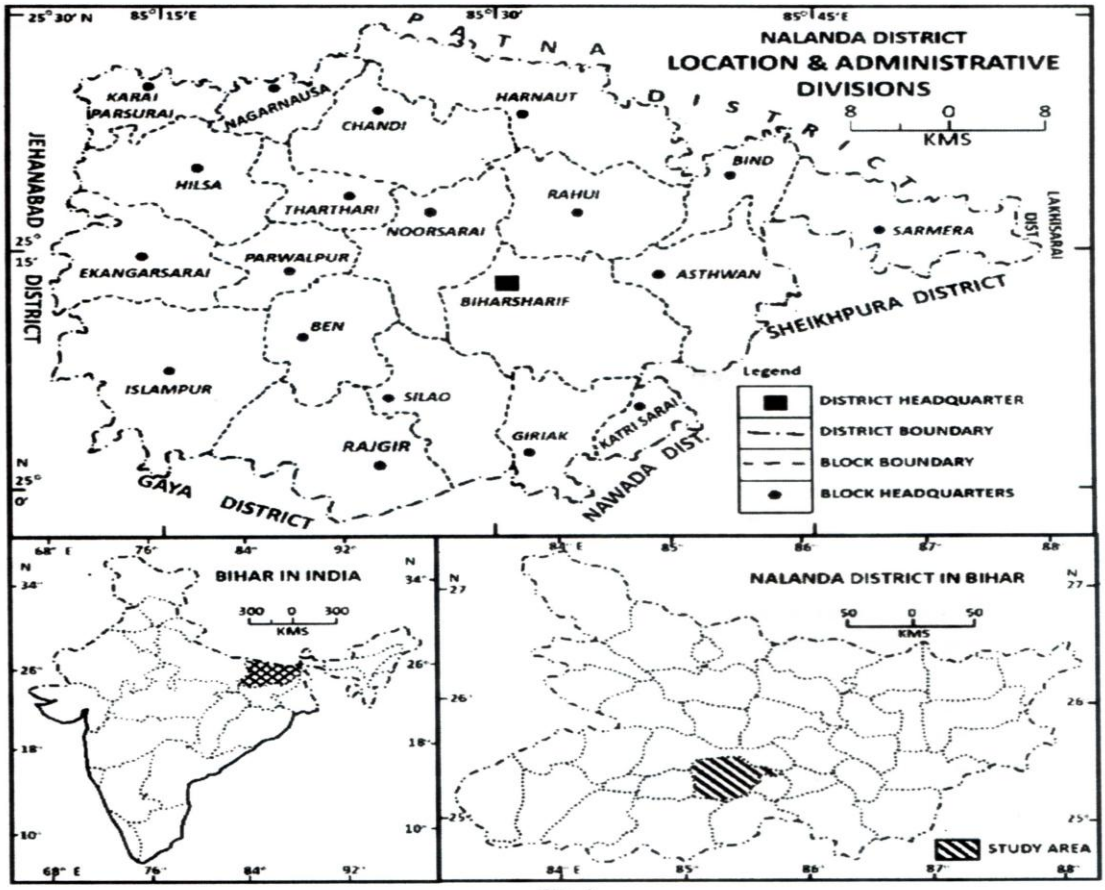

Fig. 1

बाद साक्षरता एकंगरसराय (50.78%), चंडी (45.32%), अस्थावाँ (44.78%), नूरसराय (44.68%), राजगीर (44.33%), गिरियक (44.00%), हिलसा (44.00%), इस्लामपुर (43.72%), रहुई (42.47%), हरनौत

(41.85%) तथा सरमेरा (37.72%) था। ठीक इसी तरह महिलाओं में सबसे अधिक साक्षरता बिहारशरीफ प्रखंड (29.06%) में ही था तथा इस प्रखंड के बाद ही चंडी (19.33%), इस्लामपुर (18.97%), एकंगरसराय (17.72%), अस्थावाँ (17.01%), राजगीर (16.76%), हरनौत (14.80%), हिलसा (14.46%), नूरसराय (13.95%), गिरियक (13.94%), रहुई (12.44%) एवं सरमेरा (11.84%) का स्थान था।

1991 में नालंदा जिला में कुल साक्षरता में 1981 की तुलना में कुछ वृद्धि हुई। 1991 में इस जिला में 37.59% लोग साक्षर थे जबकि बिहार राज्य में 37.49 प्रतिशत लोग साक्षर थे। इस जिला में भी सभी प्रखंडों में समान रूप से आबादी की वृद्धि नहीं हुई। सबसे अधिक साक्षरता बिहारशरीफ प्रखंड में (45.33%) थी जबकि 1981 की तुलना में 1991 में साक्षरता में बहुत कम वृद्धि हुई क्योंकि 1981 में इस प्रखंड में 42.67% साक्षरता थी जबकि 1991 में यह मात्रा 45.33% हुई जबकि अन्य प्रखंडों में इसकी तुलना में कुछ अधिक वृद्धि हुई। उदाहरणस्वरूप एकंगरसराय प्रखंड में 1981 में 34.98% साक्षरता थी जो 1991 में बढ़कर 40.54% हो गया। इन दोनों प्रखंडों के बाद साक्षरता घटते हुए क्रम में इस्लामपुर (37.13%), नूरसराय (36.29%), अस्थावाँ (36.17%), चंड़ी (36.15%), हिलसा (35.53%), राजगीर (35.24%), रहुई (34.81%), गिरियक (34.08%), हरनौत (34-03»), सरमेरा (33-52») का स्थान है। 2001 के जनगणना में कुल साक्षरता नालंदा जिला में बढ़कर क्रमशः 64-46» एवं 34-99» अंकित हुआ। सबसे अधिक कुल साक्षरता का प्रतिशत पुनः बिहारशरीफ प्रखंड (61-76») में पायी गई। इस प्रखंड में अधिक नगरीय आबादी होने के कारण साक्षरता की दर में अन्य प्रखंडों की तुलना में अधिक होना स्वाभाविक है। 2001 के जनगणना के अनुसार नालंदा जिला का साक्षरता 50-42» है। औसत कुल साक्षरता (50-42») से अधिक साक्षरता का दर परवलपुर (57-28»), एकंगरसराय (54-30»), राजगीर (53-65»), इस्लामपुर (52-90»), बेन (52-42»), हिलसा (52-17»), हरनौत (51-59»), सिलाव (51-58»), चंडी (51-65»), रहुई (51-65»), कतरी सराय (51-40»), थरथरी (50-96») इत्यादि। कम साक्षरता यानि नाल दां जिला के औसत से कम गिरियक (49-58»), नगरनौसा (49-39»), अस्थावाँ (48-45»), सरमेरा (44-80»), बिन्द (44-46»), कराय परशुराय (44-42») इत्यादि। पुरूष साक्षरता में सबसे अधिक बिहारशरीफ प्रखंड में (72-32») पायी गई और इस प्रखंड के बाद ही एकंगरसराय (70-96»), परवलपुर (70-36»), नूरसराय (67-37»), बेन (67-33»), राजगीर (66-84»), रहुई (66-54»), हिलसा (66-49»), चंडी (66-33»), इस्लामपुर (65-94»), कतरीसराय (65-24»), थरथरी (65-01») का स्थान रहा। नालंदा जिला के पुरूष साक्षरता सबसे कम नगरनौसा, सरमेरा, गिरियक, सिलाव एवं बिंद प्रखंड में पायी गई। महिला साक्षरता के दृष्टिकोण से भी बिहारशरीफ प्रखंड ही अग्रणी है। इस प्रखंड में महिला साक्षरता के दृष्टिकोण से भी बिहारशरीफ प्रखंड ही अग्रणी है। इस प्रखंड में महिला साक्षरता (49-99») पायी गयी और इसके बाद ही एकंगरसराय (40-67»), राजगीर (38-98»), इस्लामपुर (38-44»), कराय परशुराय (38-11»), सिलाव (37-70»), बेन (37-36»), हरनौत (36-60»), हिलसा (36-47»), चंडी (36-23»), कतरी सराय (36-07»), गिरियक (34-33») इत्यादि का स्थान रहा है।

तालिका क्रमांक – 3

नालंदा जिला की दशकीय आबादी में वृद्धि (1901-2011)

जनगणना वर्ष	आबादी	दशकीय अंतर	दशकीय अंतर प्रतिशत में		
			जिला	प्रांत	देश
1901	596158				
1911	590448	5710	0.96	1.52	5.75
1921	578778	11670	1.98	0.97	8.60
1931	677730	98952	17.1	9.74	8.63
1941	787136	109406	16.14	12.22	16.74
1951	927977	140841	17.89	10.56	13.3
1961	1087935	159958	17.24	19.79	21.63
1971	1306062	218127	20.05	20.91	24.79
1981	1641325	335263	25.67	24.16	24.76
1991	1997995	356670	21.73	23.38	23.41
2001	2370528	372533	18.64	28.62	21.9
2011	2877653	501995	21.17	25.07	17.64

2011 के जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के साक्षरता में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। तालिका संख्या 3-8 में 1981, 1991, 2001 तथा 2011 की साक्षरता का आंकड़ा के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इस जिला के सभी प्रखंडों के साक्षरता में प्रगति हुई है। इस जिला के कुल साक्षरता में 2001 की तुलना में लगभग 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। महिलाओं की साक्षरता में और अधिक वृद्धि हुई है क्योंकि 2001 में महिला साक्षरता 34-99 प्रतिशत थी जो बढ़कर 2011 में 53-10 प्रतिशत हो गया। कुल साक्षरता में सबसे अधिक प्रतिशत परवलपुर प्रखंड में (70-21») पाया गया और इस प्रखंड के अतिरिक्त नालंदा जिला के औसत प्रतिशत से अधिक बिहारशरीफ (69-32»), एकंगरसराय (69-23»), हिलसा (66-73»), इस्लामपुर (66-05»), चंडी (64-88»), बेन (64-62») इत्यादि में पाया गया। शेष प्रखंडों में औसत से कम कुल साक्षरता अंकित हुआ। इसके अंतर्गत अस्थावाँ, बिन्द, सिलाव, राजगीर, हरनौत, सरमेरा, कराय परशुराय, थरथरी इत्यादि प्रखंडों सम्मिलित है। पुरूष साक्षरता भी सबसे अधिक परवलपुर प्रखंड में (81-40») पाया गया। इस प्रखंड के अतिरिक्त तथा नालंदा जिला के औसत पुरूष साक्षरता (74-86») से अधिक एकंगरसराय (80-62»), सरमेरा (78-08»), हिलसा (78-08»), बिहारशरीफ (77-22»), कतरीसराय (76-29»), इस्लामपुर (76-10»), नूरसराय (75-91») एवं चंडी (75-88») का स्थान रहा। शेष प्रखंडों में औसत से कम पुरूष साक्षरता अंकित हुआ। इसके अंतर्गत रहुई, अस्थावाँ, बिंद, राजगीर, सिलाव, गिरियक, हरनौत, सरमेरा, कराय परशुराय, थरथरी आदि का स्थान रहा। महिला साक्षरता में सबसे आगे एकंगरसराय (64-82») का स्थान रहा इसके बाद ही बिहारशरीफ (60-70»), परवलपुर (57-94»), इस्लामपुर (54-48»), हिलसा (54-30»), बेन (53-52»), सिलाव (53-39») एवं राजगीर (53-33») का स्थान रहा। शेष प्रखंडों में औसत महिला साक्षरता से कम प्रतिशत अंकित हुआ। इसके अंतर्गत नूरसराय, रहुई, अस्थावाँ, बिंद, गिरियक, कतरीसराय, हरनौत, सरमेरा, कराय परशुराय, चंडी, थरथरी, नगरनौसा आदि का स्थान रहा।

निष्कर्ष (Conclusion)

पृथ्वी के समस्त संसाधनों में मानव संसाधन सबसे महत्वपूर्ण है। समस्त भौगोलिक अध्ययन में मानव का केन्द्रीय स्थान है। स्वयं मानवीय शक्ति, बौद्धिक बल पर ही विभिन्न राष्ट्रों ने अपना विकास किया है। अध्ययन क्षेत्र का भी प्रादेशिक विकास मानव को विकसित करके किया जा सकता है।

REFERENCES

1. चान्दना आर.सी. (2007) : ''जनसंख्या भूगोल'' कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–231
2. मेमोरिया, सी. एवं सिसौदिया, एम.एस. (2008) : ''आर्थिक भूगोल के मूल तत्व एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ–7
3. मौर्य एस.डी. (2009): ''जनसंख्या भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन पब्लिकेशन, इलाहाबाद, पृ0–325–326
4. खुल्लर, डी.आर. (2001) :''मानव भूगोल'' सरस्वती पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0–15–20
5. अग्रवाल, एस.एन. (2000) :''जनसंख्या भूगोल'' राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 80–85